३.**कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद श्रीमती रूपा धीरू आ श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि)**

भगता बेङक देश-भ्रमण

१.मूल तेलुगु कविता: पसुपुलेटि गीता; तेलुगुसँ हिंदी अनुवाद: आर.शांता सुंदरी; हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद: विनीत उत्पल (दिल्लीक बलात्कारक घटनापर)- **दुमर्जा** २. मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हरिशंकर श्रीवास्तव “शलभ"- (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल)

1

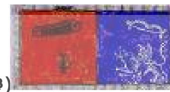
मूल तेलुगु कविता: पसुपुलेटि गीता; तेलुगुसँ हिंदी अनुवाद: आर.शांता सुंदरी; हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद: विनीत उत्पल

(दिल्लीक बलात्कारक घटनापर)

दुमर्जा

देह भऽ गेल अछि एकटा इतिहास-दोख
दूटा ठोढ़, दूटा गाल
दूटा स्तन, दूटा जांघ
जोड़ा चुहचुही
दुइए युगमे एहन जेना जिनगी भऽ गेल खतम

जिनगी एत्ते संकीर्ण भऽ गेल जे
कनियो टा डोलू तँ उघड़ए लागैत अछि



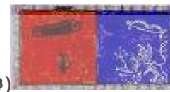


भीतक रहस्य बिनु खुजनहिये
ग्राफिती भटरंग हुअए लागैत अछि
काल्हि नै जानि केकर बेर अछि?

खराप नै मानब,
लागए लागल अछि
लगमे ठाढ़ सभटा पुरुख जेना
जांघक बीच अप्पन
भाला लऽ कऽ चलि रहल अछि
समुद्र आ अकासकेँ मिला कऽ बुनलापर सेहो
ऐ अदौक पाथर-युगक उघारकेँ
झपबा लेल
हाथ भरि लत्ता नै भेटैत अछि

आँखि खुजलेपर तँ
बुझाएत

जे भोर भऽ गेल
जइ अंगमे आँखिये नै
ओकरा लेल
आन्हरक-अन्हारे आनंद अछि
अँतड़ीये टा नै
हृदएकेँ सेहो उधेसैत
देहमे अन्हार सोझे खन्ती बनैए
धँसि जाइए
खराप नै मानब,
कीड़ीसँ कीड़ीक नाशक आशा करैत
मृत्युसँ अमृत मांगैत
मालजाल भऽ मालजालक बहिष्कार के करैत अछि?
मान्वताक भ्रमजालमे
सिग्नल सभक बीच बड़का सड़क
जखैन बनि जाइत अछि आक्रंदनक गुमकी





कान फाड़ैबला
प्रश्नक गोली जनमि रहल अछि
तँ की भेल?
विवेकपर लाठी बजरि रहल अछि
फुसियाहींक भरोस, बिकट्ठ गारि
नोर पोछि रहल अछि।
प्रहरी-दलक पसार
नोरबला गैसक मेघ बनि
विश्वासपर आच्छादित भऽ रहल अछि।
नग्न एकटा मृत्युक ओजार बनि गेल अछि
अप्पन आ आस-पड़ोसक घर
नव घा बनि औनाए लगैत अछि
हमरा दूनू गोटेक अस्तित्व काएम रहबाक हुअए

तँ अहाँकेँ हमरामे

मनुष्यता बनि झहरऽ पड़त

हमरा अहाँमे पैसि

मातृत्व बनि बहए पड़त

देहक दोखी भेलाक बाद

प्राणक हिलकोर मिझा गेलाक बाद

चण्ठमे अनूदित भेलाक बाद

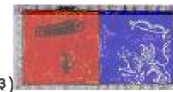
बालुक पानिक झिल्हरिक बाँझ स्थितिमे

प्रवासी भऽ प्रवेश केलाक बाद...

माँ सेहो अहाँ लेल

एकटा गलत सम्बन्ध बनि कऽ रहि जाएत...

खराप नै मानब,



मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १२३ म अंक ०१ फरबरी २०१३ (वर्ष ६ मास ६२ अंक १२३) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आब एतए मुर्दाघरक अलाबे

सौरी-घरक कोनो खगता नै!

2

मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग-  हरिशंकर श्रीवास्तव ‘‘शलभ"- (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद  विनीत उत्पल)

ब्राह्मचर्य एवं अध्ययन

श्री भागवत दर्शक अनुसार, विभांडक सोचैत छला जे अप्सरा उर्वशीक देखलेसँ हुनकर तेज नष्ट भेल। तइसँ ओ अप्पन नेनाकेँ गलतीयोसँ कोनो स्त्रीक दर्शन नै कराएत। ओकरा विशुद्ध ब्रह्मचारी बनाएब, ई सोचि कऽ ओ अप्पन नेना ऋष्यश्रृंगकेँ आश्रमसँ बाहर नै जाइले दै छल। ओ हुनकासँ तप, अग्निहोत्र कराबैत छल, वेद पढ़ाबैत छल आ पैघ-पैघ ऋषिकेँ छोड़ि कऽ ओकरा केकरोसँ भेँटो नै करऽ दै छल। स्त्रीकेँ तँ ओ अप्पन आश्रमक परिधि धरिमे पएरो नै राखऽ लेल दै छल। कोनो बूढ़ ऋषिक स्त्री सेहो ओतए नै आबि सकैत छल। आबैक गप तँ दूर, ओ अपन नेनाक आगू कोनो स्त्रीक नाम धरि नै लैत छल। ऋष्यश्रृंग जानितो नै छल जे मुनिक अलाबे कोनो अओर स्त्री-पुरुख होइत अछि। ओ नै तँ कोनो नग्न देखने छल आ नहिये नग्नक कोनो वस्तुए।9

ऋष्यश्रृंगक समय अग्नि आ अप्पन तपस्वी पिताक सेवामे बितैत छलै। स्त्रीक अस्तित्वक तँ हुनका पतो नै छलनि। तकर बादो ओ वेदक परगामी विद्वान छल।10

रामायणकार हुनका शक्तिशाली महर्षि कहने छथि। हुनका विषय-सुखक कनियो टा ज्ञान नै छल। ओ अखंड ब्रह्मचारी छल।